SHIKSHA SAMVAD
International Journal of Multidisciplinary Research
ISSN: 2584-0983 (Online)
© Shiksha Samvad|Volume-03| Issue-03| March- 2026
Available online at: https://shikshasamvad.com/
DOI:- https://doi.org/10.64880/shikshasamvad.v3i3.17

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों पर सोशल मीडिया के प्रभाव व उपयोग एवं दुष्प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन

राहुल कुमार[1] एवं डॉ0 सुशील कुमार[2]
[1]शोधार्थी, शिक्षा विभाग, हिन्दू कॉलेज, मुरादाबाद, यू.पी., भारत
[2]एसोसिएट प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, हिन्दू कॉलेज, मुरादाबाद, यू.पी., भारत

सारांश :

प्रस्तुत शोध अध्ययन में माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत् विद्यार्थियों पर सोशल मीडिया के प्रभाव व उपयोग एवं दुष्प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन तहसील धामपुर क्षेत्र में किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में शोधार्थी द्वारा उद्देश्य रूप में माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों पर सोशल मीडिया के प्रभाव एवं दुष्प्रभाव का शहरी एवं ग्रामीण के आधार पर अध्ययन करने का निश्चय किया। शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत शोध में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया। इस शोध में न्यादर्श हेतु तहसील धामपुर के माध्यमिक स्तर के 200 विद्यार्थियों का चयन यादृच्छिक विधि द्वारा किया गया है। इस शोध में शोधार्थी ने अध्ययन हेतु स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया। निष्कर्ष रूप में माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों पर सोशल मीडिया के प्रभाव एवं दुष्प्रभाव में सार्थक अन्तर पाया गया।

मूल शब्दः माध्यमिक स्तर, सोशल मीडिया, सर्वेक्षण विधि, यादृच्छिक विधि, स्वनिर्मित प्रश्नावली।

प्रस्तावना :

आज का युग सोशल मीडिया और तकनीक का युग है, जिसके माध्यम से हम अपने विचारों, भावनाओं तथा संदेशों को एक–दूसरे तक पहुंचाते हैं। मनुष्य सभी जीवों में सर्वश्रेष्ठ है और इस समय इंटरनेट और सोशल मीडिया के माध्यम से मनुष्य ने बड़ी प्रगति की है। सर्वप्रथम सोशल मीडिया का उल्लेख **1994** में हुआ था, लेकिन आज यूटयूब, व्हाट्सएप, फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम, गूगल जैसी सोशल साइट्स दुनिया भर में व्यक्तियों को जोड़ रही हैं। यह सोशल मीडिया साइट्स सूचना एकत्रित करने, जनमत तैयार करने, विभिन्न संस्कृतियों के लोगों को परस्पर जोड़ने एवं भागीदार बनाने में मदद करती हैं। सोशल मीडिया साइट्स सामान्य सम्पर्क, संवाद या मनोरंजन के अतिरिक्त नौकरी, व्यवसाय आदि ढूंढ़ने व उत्पादों के प्रचार–प्रसार में भी सहायता करता है। साथ ही सूचना संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) पर आधारित सोशल मीडिया के आविष्कार ने शिक्षा और अध्ययन में नए नवाचारों की गति को तीव्र किया है।

वर्तमान समय में सोशल नेटवर्किंग साइट्स का प्रयोग हर आयु वर्ग के लोगों में बढ़ रहा है खासकर विद्यार्थियों में। आज के समय में सूचना, सम्पूर्ण विश्व में मात्र एक क्लिक से पहुंच जाती है और इसे नकारा नहीं जा सकता। जिस प्रकार एक सिक्के के दो पहलू होते है उसी प्रकार सोशल मीडिया के भी दो पहलू हैं–सकारात्मक तथा नकारात्मक। आज के समय में हर कोई सोशल मीडिया पर बहुत ज्यादा सक्रिय है, चाहे वे वयस्क हों या फिर बच्चे। इसका प्रभाव हर किसी

के जीवन पर सकारात्मक और नकारात्मक दोनों ही तरह का पड़ता है, खासकर विद्यार्थियों पर। सोशल मीडिया विद्यार्थियों के जीवन पर शैक्षणिक विकर्षण, मनोदशा विकार, नींद की कमी, अश्लील चित्र, आत्मविश्वास की कमी, गलत सूचना फैलाना, गोपनीयता सम्बन्धी मुद्दे एवं स्वास्थ्य सम्बन्धी मुद्दे जैसे दुष्प्रभाव डाल रही है।

वर्तमान समय में युवाओं को सोशल नेटवर्किंग वेबसाइट्स का नशा सा हो गया है। तकनीकी एवं सोशल मीडिया पर अपने मित्रों के साथ घंटों तक चैटिंग करना, कई बार स्टेट्स अपडेट करना, फोटो अपलोड करना जैसी आदतों ने युवाओं को काफी हद तक प्रभावित किया है। घंटों तक फेसबुक, इंस्टाग्राम, यूट्यूब जैसी साइट्स पर समय बिताने से न केवल उनकी पढ़ाई प्रभावित हो रही है बल्कि धीरे–धीरे कुछ नया करने की योग्यता व हौंसला भी खत्म हो रहा है। सोशल नेटवर्किंग साइट्स के माध्यम से विभिन्न प्रकार की अश्लील सामग्री और भड़काऊ बातें भी विद्यार्थियों तक प्रसारित की जा रही हैं, जोकि उनके मस्ष्तिक पर बुरा प्रभाव डालती है और जिनकी वजह से वह अपने लक्ष्य से भटक कर गलत आचरण में लिप्त होते जा रहे हैं और कुछ मुद्दों में तो वह सामप्रदायिक दंगें–फसादो आदि में भी शामिल हो रहे हैं।

साइबरबुलिंग दुनिया भर में सबसे बड़ी साइबर समस्याओं में से एक है जो सोशल मीडिया पर किसी अन्य व्यक्ति को ऑनलाइन हेरफेर करने, अपमानित करने और नुकसान पहुंचाने के लिए बहुत होती है। यह छात्रों को मानसिक रूप से प्रताड़ित और भावनात्मक रूप से अस्वस्थ होने का कारण बन गया है। सोशल मीडिया के नियमित उपयोग से छात्रों की मनोदशा सम्बन्धी विकारों का स्तर बढ़ रहा है। स्पष्ट है कि यदि कोई विद्यार्थी सोशल मीडिया का उपयोग कर रहा है और अचानक कोई अश्लील छायाचित्र या चलचित्र सामने आ जाता है तो विद्यार्थी उसे देखने से बच नहीं सकता जो उसको गलत आचरण की ओर ले जाता है। सोशल मीडिया का एक बड़ा नकारात्मक प्रभाव यह है कि छात्रों को उतनी नींद नहीं मिलती जितनी उन्हें चाहिए। नींद की कमी सीधे उनके मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करती है क्योंकि समुचित नींद आवश्यक है।

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी इस आयु वर्ग में आते हैं जहाँ मानसिक, भावनात्मक एवं सामाजिक विकास तीव्र गति से होता है। सोशल मीडिया उनके व्यक्तित्व निर्माण, सामाजिक व्यवहार, शैक्षिक उपलब्धि एवं जीवन शैली को प्रभावित करता है। शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यार्थियों में सोशल मीडिया के उपयोग, प्रभाव एवं दुष्प्रभाव में स्पष्ट अन्तर देखा जा सकता है। शहरी क्षेत्रों में ग्रामीण क्षेत्रों की अपेक्षा इंटरनेट की सुविधा, स्मार्टफोन, कम्प्यूटर एवं अन्य डिजिटल संसाधनों की उपलब्धता अधिक होने के कारण शहरी विद्यार्थी सोशल मीडिया का अधिक उपयोग करते हैं। परिणामस्वरूप, उन पर इसके प्रभाव एवं दुष्प्रभाव दोनों अधिक स्पष्ट रूप से दृष्टिगत होते हैं।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

वर्तमान समय में सोशल मीडिया सबसे अधिक प्रचलित व सशक्त माध्यम है, इसका विद्यार्थियों पर बहुत अधिक प्रभाव दिखाई देता है। सोशल मीडिया के विकास के साथ–साथ समाज में परिवर्तन हो रहा है विशेषकर विद्यार्थी वर्ग पर इसका अत्यधिक प्रभाव पड़ता है। यह प्रभाव सकारात्मक व नकारात्मक दोनों प्रकार से दृष्टिगत होता है। वर्तमान समय में सोशल मीडिया के साधन प्रत्येक घर में उपलब्ध है जिससे इन साधनों का प्रभाव व्यक्तियों के हर वर्ग पर दिखाई देता है। इसके माध्यम से जहां हमें नवीन जानकारियां प्राप्त होती है, वहीं दूसरी तरफ नयी तथा अनेकों नवीन समस्याओं का भी प्रादुर्भाव हो रहा है। साथ ही हमारे सामाजिक व नैतिक मूल्यों का ह्रास भी दिखाई देता है। सोशल मीडिया के माध्यम से विद्यार्थी अपने ज्ञान में तो वृद्धि कर रहे हैं परन्तु साथ ही साथ कुछ अपराधिक कार्यों में भी लिप्त होते जा रहे हैं। अतः वर्तमान समय को देखते हुए यह आवश्यक हो गया है कि विद्यार्थियों पर सोशल मीडिया के सकारात्मक व नकारात्मक पहलुओं का गहन अध्ययन किया जाये जिससे विद्यार्थियों को इसके दुष्प्रभावों से बचाया जा सके। अतः प्रस्तुत शोध की

© Shiksha Samvad| Received: 03 March-2026 | Accepted: 10 March- 2026 | Published: 15 March- 2026

प्रसांगिकता को देखते हुए यह शोध अध्ययन किया जा रहा है। इन तथ्यों को ध्यान में रखकर इस विषय **"माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों पर सोशल मीडिया के प्रभाव व उपयोग एवं दुष्प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन"** को शोध हेतु चुना गया है।

समस्या कथन

"माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों पर सोशल मीडिया के प्रभाव व उपयोग एवं दुष्प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन।"

सक्रियात्मक परिभाषाएँ

माध्यमिक स्तर – विद्यालय शिक्षा का वह स्तर जिसमें कक्षा 9 से 12 के विद्यार्थी सम्मिलित होते हैं, माध्यमिक स्तर कहलाता है।

सोशल मीडिया – ऐसे डिजिटल प्लेटफॉर्म जिनके माध्यम से व्यक्ति विचारों, सूचनाओं, चित्रों, विडियो आदि का आदान–प्रदान करता है, सोशल मीडिया कहलाते हैं। जैसे– फेसबुक, व्हाटसएप, इंस्टाग्राम, यूटयूब आदि।

प्रभाव – सोशल मीडिया के वे सकारात्मक परिणाम जो विद्यार्थियों के सामाजिक, मानसिक एवं शैक्षिक विकास को बढ़ावा देते हैं, प्रभाव कहलाते हैं।

दुष्प्रभाव – सोशल मीडिया के वे नकारात्मक परिणाम जो विद्यार्थियों के मानसिक, सामाजिक एवं शैक्षिक विकास को बाधित करते हैं, दुष्प्रभाव कहलाते हैं।

शोध के उद्देश्य

- माध्यमिक स्तर के शहरी व ग्रामीण विद्यार्थियों पर सोशल मीडिया के प्रभाव का अध्ययन करना।
- माध्यमिक स्तर के शहरी व ग्रामीण विद्यार्थियों पर सोशल मीडिया के दुष्प्रभाव का अध्ययन करना।

शोध की परिकल्पनाएँ

- माध्यमिक स्तर के शहरी व ग्रामीण विद्यार्थियों पर सोशल मीडिया के प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- माध्यमिक स्तर के शहरी व ग्रामीण विद्यार्थियों पर सोशल मीडिया के दुष्प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

अध्ययन का सीमाकंन

- शोध हेतु तहसील धामपुर के माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र से 5–5 विद्यालयों का चयन किया गया।
- प्रस्तुत शोध अध्ययन के लिए तहसील धामपुर के शहरी माध्यमिक विद्यालय व ग्रामीण माध्यमिक विद्यालय के 200 छात्र–छात्राओं को शामिल किया गये।
- इस अध्ययन के लिए प्रत्येक शहरी एवं ग्रामीण विद्यालय से 10 छात्र एवं 10 छात्राओं का चयन किया गया।

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

अहमद एवं हुसैन (2020) ने अपने अध्ययन में बताया कि सोशल मीडिया के उपयोग से विद्यार्थी डिजिटल साक्षरता, सूचना मूल्याकंन और ऑनलाइन सुरक्षा के कौशल विकसित करते हैं।

शर्मा एवं शर्मा (2021) के पंजाब में किए गये अध्ययन में पाया गया कि 68 प्रतिशत विद्यार्थी दैनिक 2–4 घंटे सोशल मीडिया पर बिताते हैं, मुख्यतः शाम के समय।

बोस (2022) के कोलकत्ता अध्ययन में पाया गया कि शहरी विद्यार्थियों में सोशल मीडिया की पहुँच और उपयोग ग्रामीण विद्यार्थियों की तुलना में काफी अधिक है।

अध्ययन की विधि

प्रस्तुत लघु शोध में शोधकर्ता द्वारा सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया।

© Shiksha Samvad| Received: 03 March-2026 | Accepted: 10 March- 2026 | Published: 15 March- 2026

जनसंख्या

प्रस्तुत लघु शोध में तहसील धामपुर के समस्त माध्यमिक स्तर के स्कूलों के विद्यार्थियों को शामिल किया गया।

न्यादर्श

प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्ता द्वारा तहसील धामपुर के शहरी एवं ग्रामीण माध्यमिक स्तर के 200 विद्यार्थियों को यादृच्छिक विधि के द्वारा चुना गया।

अध्ययन का उपकरण

प्रस्तुत लघु शोध में स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया।

सांख्यिकीय प्रविधियां

प्रस्तुत अध्ययन में शोधार्थी द्वारा परीक्षण करने के लिए आंकड़ों का संग्रह किया तथा तालिकाबद्ध कर सांख्यिकीय विश्लेषण मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–परीक्षण द्वारा किया एवं आंकड़ों के मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता की जांच की गयी।

आँकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या

तालिका–1

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी–परीक्षण
शहरी	100	29.80	6.12	2.45
ग्रामीण	100	24.65	5.98	

शोध परिकल्पना को दृष्टिगत रखते हुए यह ज्ञात होता है कि माध्यमिक स्तर के शहरी विद्यार्थियों पर सोशल मीडिया के प्रभाव का मध्यमान 29.80 तथा मानक विचलन 6.12 और ग्रामीण विद्यार्थियों पर सोशल मीडिया के प्रभाव का मध्यमान 24.65 तथा मानक विचलन 5.98 है। शहरी विद्यार्थियों का मध्यमान एवं मानक विचलन ग्रामीण विद्यार्थियों की तुलना में अधिक है। टी–परीक्षण का प्रयोग करने पर प्राप्त मान 2.45 प्राप्त हुआ जो कि सार्थकता स्तार 0.05 के मान 1.97 से अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है। अतः माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों पर सोशल मीडिया के प्रभाव में सार्थक अन्तर पाया गया है।

तालिका–2

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी–परीक्षण
शहरी	100	28.40	6.20	2.10
ग्रामीण	100	24.90	5.85	

शोध परिकल्पना को दृष्टिगत रखते हुए यह ज्ञात होता है कि माध्यमिक स्तर के शहरी विद्यार्थियों पर सोशल मीडिया के प्रभाव का मध्यमान 28.40 तथा मानक विचलन 6.20 और ग्रामीण विद्यार्थियों पर सोशल मीडिया के प्रभाव का मध्यमान 24.90 तथा मानक विचलन 5.85 है। शहरी विद्यार्थियों का मध्यमान एवं मानक विचलन ग्रामीण विद्यार्थियों की तुलना में अधिक है। टी–परीक्षण का प्रयोग करने पर प्राप्त मान 2.45 प्राप्त हुआ जो कि सार्थकता स्तार 0.05 के मान 1.97 से अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है। अतः माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों पर सोशल मीडिया के दुष्प्रभाव में सार्थक अन्तर पाया गया है।

© Shiksha Samvad| Received: 03 March-2026 | Accepted: 10 March- 2026 | Published: 15 March- 2026

शैक्षिक निहितार्थ

- शिक्षकों को चाहिए कि वे विद्यार्थियों को सोशल मीडिया के सकारात्मक उपयोग हेतु मार्गदर्शन प्रदान करें तथा इसे शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में रचनात्मक रूप से सम्मिलित करें।
- पाठ्यक्रम निर्माण में सोशल मीडिया आधारित अधिगम सामग्री को सम्मिलित किया जा सकता है जिससे विद्यार्थियों की रूचि एवं सहभागिता बढ़े।
- विद्यालयों में डिजिटल साक्षरता कार्यक्रम संचालित किए जाने चाहिए ताकि विद्यार्थी सोशल मीडिया के सुरक्षित एवं संतुलित उपयोग को समझ सकें।
- ग्रामीण विद्यालयों में तकनीकी संसाधनों की उपलब्धता बढ़ाकर विद्यार्थियों को डिजिटल शिक्षा के समान अवसर प्रदान किए जाने चाहिए।

सुझाव

- भविष्य में प्राथमिक एवं उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों पर सोशल मीडिया के प्रभाव का अध्ययन किया जा सकता है।
- बालिकाओं एवं बालकों पर सोशल मीडिया के प्रभाव का पृथक तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
- सोशल मीडिया के मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव का गहन विश्लेषण किया जा सकता है।
- दीर्घाकालीन अध्ययन के माध्यम से सोशल मीडिया के दीर्घकालीन प्रभावों का मूल्यांकन किया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. **ग्रीनहाउ, एस. (2019):** डिजिटल युग में शिक्षा : सोशल मीडिया के अवसर और चुनौतियॉ. इंटरनेशनल रिव्यू ऑफ एजुकेशन, 65(4), 553–571.
2. **गुप्ता, आर., एवं शर्मा, एस. (2019):** दिल्ली के माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के अकादमिक प्रदर्शन पर सोशल मीडिया का प्रभाव. इंडियन एजुकेशन रिव्यू 54(1),78–95.
3. **बोस, आर. (2022):** पश्चिम बंगाल में शहरी और ग्रामीण किशोरों के बीच सोशल मीडिया उपयोग में अन्तर–एक तुलनात्मक अध्ययन. जर्नल ऑफ एजुकेशन एंड सोशल साइंस, 8(3), 112–128.
4. **किरान, के. एट अल. (2016):** सोशल मीडिया का उपयोग और किशोरों का मनोवैज्ञानिक कल्याण–एक व्यवस्थित समीक्षा. एडोलेसेंट रिसर्च रिव्यू, 1(4), 315–330.
5. **सिंह, ए. (2021):** भारत में **COVID-19** महामारी के दौरान ऑनलाइन शिक्षा में यूटयूब की भूमिका. जर्नल ऑफ एजुकेशनल टेक्नोलॉजी सिस्टम्स, 49(3)345–367.
6. **शर्मा, पी., एवं शर्मा, आर. (2021):** पंजाब के माध्यमिक विद्यार्थियो में सोशल मीडिया की लत और उनका शैक्षिक प्रदर्शन. पंजाब जर्नल ऑफ एजूकेशनल रिसर्च, 28(2),56–72.
7. **स्मिथ, ए. एट अल. (2017):** किशोरों के सोशल मीडिया उपयोग से जुड़े उपयोग और संतुष्टि. जर्नल ऑफ एडोलेसेंट, 55, 51–60.
8. **अहमद, एस., एवं हुसैन, एस. (2020):** भारतीय माध्यमिक विद्यार्थियों में डिजिटल साक्षरता और सोशल मीडिया उपयोग. इंडियन जर्नल ऑफ एजुकेशनल टेक्नोलॉजी, 15(2),45–62.

9. **पाटिल, एस. एवं देशपांडे, एम. (2020):** महाराष्ट्र में माध्यमिक विद्यार्थियों के बीच सोशल मीडिया उपयोग पैटर्न. जर्नल ऑफ एडोलेसेंट रिसर्च इन इंडिया, 7(1), 34–49.

10. **राव, वी. एवं मेनन, एस. (2020):** केरल में किशोरों पर सोशल मीडिया का प्रभाव : लिंग आधारित विश्लेषण. साउथ इंडियन जर्नल ऑफ सोशल साइंस, 16(3), 189–205.

Cite this Article:

राहुल कुमार एवं डा0 सुशील कुमार," माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों पर सोशल मीडिया के प्रभाव व उपयोग एवं दुष्प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन" *Shiksha Samvad International Open Access Peer-Reviewed & Refereed Journal of Multidisciplinary Research, ISSN: 2584-0983 (Online), Volume 03, Issue 03, pp.154-159, March-2026. Journal URL: https://shikshasamvad.com/*

This is an Open Access Journal / article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution License CC BY-NC-ND 3.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited. All rights reserved.

CERTIFICATE

of Publication

This Certificate is proudly presented to

राहुल कुमार एवं डॉ0 सुशील कुमार

For publication of research paper title

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों पर सोशल मीडिया के प्रभाव व उपयोग एवं दुष्प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन

Published in 'Shiksha Samvad' Peer-Reviewed and Refereed Research Journal and E-ISSN: 2584-0983(Online), Volume-03, Issue-03, Month March 2026, Impact Factor-RPRI-3.87.

Dr. Neeraj Yadav
Editor-In-Chief

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Executive-chief- Editor

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at: https://shikshasamvad.com/

DOI:- https://doi.org/10.64880/shikshasamvad.v3i3.17